International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0975-3486,(Print)E-ISSN-2320-5482, June-2013 VOL-IV *ISSUE- 45

शोध पत्र- शिक्षा

मुक्त विद्यालय, राजकीय तथा अनुदानित विद्यालय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन

June,2013

* डॉ. महेश कुमार मुछाल ** उमलेश रानी

* एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यापक प्रशिक्षण विभाग, दि. जैन कॉलिज, बड़ौत

** शोध छात्रा, अध्यापक प्रशिक्षण विभाग, दि. जैन कॉलेज, बड़ौत

i`Lrkouk%

भारत आज अनेक समस्याओं से घिर गया है। इन समस्याओं को हल करने के लिए राष्ट्रीय विकास, सुरक्षा और एकता का उच्चतम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमें राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता है। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण माध्यमिक स्तर तक एक सार्वभौम सर्वांगीण शिक्षा प्रणाली तथा पंथ निरपेक्ष शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा ही किया जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा को राष्ट्र की आकांक्षाओं के अनुकूल राष्ट्रीय स्वरूप देकर तथा उसका प्रकाश भारत के प्रत्येक कुटीर तक पहुंचाकर ही हम राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर सकते हैं। शिक्षा को सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों में विकसित होने का अवसर दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली तथा पंथ निरपेक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए सरकारी, निजी तथा सरकारी सहायता प्राप्त अशासकीय शिक्षण संस्थाओं पर लोकतान्त्रिक सरकार का समुचित नियन्त्रण होना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाकर ही हम राष्ट्र को सही अर्थों में शिक्षित कर सकते हैं। साक्षरता अभियान से राष्ट्र को शिक्षित करने का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। शिक्षा का प्रकाश भारत के कुटीर तक पहुंचाने के लिए 93 वें संवैधानिक संशोधन द्वारा 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है।

'kSf{kd vfHkizsj.kk%

व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन में, अपने घर में, परिवार में, समाज में तथा आस पास के लोगों में उपलब्धियों को पाते हुए देखता है और उनके सुखी एवं समषद्धि से परिपूर्ण वातावरण से कुछ न कुछ सीख लेता है और यह सीख उसको अपने खुद की उपलब्धि के लिए उसे प्रेरित करती है जिसे हम अभिप्रेरणा कहते हैं। बालक पढ़ाई के दौरान जब अपने आसपास के लोगों को पढ़ाई में सफल होते हुए देखता है तो वह स्वयं को भी उसके समान बनाने की कोशिश करता है और इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के गतिविधियों व प्रयासों को करता रहता है। व्यक्ति यह सब शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधयों को शैक्षिक अभिप्रेरणा के द्वारा ही कर पाता है। जिसे हम शैक्षिक अभिप्रेरणा कहते हैं। यह अभिप्रेरणा उसके मस्तिष्क में इतना बल प्रदान करती है कि वह अपने शैक्षणिक कार्यों को और अधिक परिश्रम, लगन व तन्मयता के साथ करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

v/;;u dk vkSfpR;%

बैटमैन (1960), कार्नेस (1961), फैदर (1963), मौर्रे (1964), वैनर (1966), अर्नाट (1968), तामहंकर (1968), बायर्जर (1971), गोकुलनाथन (1972), देसाई एवं प्रिया (1972), रेड्डी (1973), दत्त (1973), सीठा (1975), शर्मा एवं सिन्हा (1975), विल्सन (1976), ओबराय (1977), सिद्दीकी (1979), सिंघन (1979), शर्मा (1981), हसबैल (1982), सामुंगासुन्दरम (1983), फातिमा (1986), शर्मा एवं अन्य (1989), वर्मा एवं श्वैन (1990), येह (1991), लेविस (1991), शर्मा (2002), विद्याधर (2006), सुभाष(2010) आदि ने शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बन्धित परम्परागत शिक्षा व्यवस्था में अध्ययन करके विभिन्न परिणामों को प्राप्त किया जो अध्याय दो में वर्णित है।

फुटेला (1980), साहू एवं मुछाल (2000), मिश्रा (2000), कौशल (2001), मुछाल (2001), यादव (2003), त्रिपाठी (2004), खरे (2006), मुछाल एवं कुमार (2008), दिनेष (2009), मुछाल एवं सत्यवीर (2009), मुछाल एवं विश्नोई (2010) आदि ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न आयामों पर जैसे छात्र सहायता सेवा, पृष्ठपोषण, शैक्षिक उपलब्धि, सूचना एवं संचार तकनीकी सम्बन्धी विभिन्न अध्ययनों को किया, जिनके परिणाम अध्याय दो में उल्लिखित है।

सन्दर्भ साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि अभी तक शैक्षिक अभिप्रेरणा व शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर जो भी अध्ययन हुए हैं वह शिक्षा के विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों पर तुलनात्मक अध्ययन हुए हैं तथा परम्परागत शिक्षा पर आधारित है। दूरस्थ शिक्षा पर जो अध्ययन हुए हैं वे शैक्षिक अभिप्रेरणा व शैक्षिक आंकाक्षा स्तर से सम्बन्धित नहीं हैं इसलिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है। इसलिए शोधार्थिनी ने इन तीनों चरों को आधार मानकर परम्परागत एवं दूरस्था शिक्षा व्यवस्था के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया।

v/;;u ds mn~ns';%

1. मुक्त विद्यालयी एवं राजकीय तथा अनुदानित विद्यालय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

'kks/k ifjdYiuk%

1. विद्यालयवार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।
   (अ) राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   (ब) राजकीय एवं मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   (स) अनुदानित एवं मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

tulа[;k ,oa U;kn'kZ %

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के राजकीय, अनुदानित एवं मुक्त विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं में पंजीकृत उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के समस्त विद्यार्थी जनसंख्या के रूप में लिये गए हैं तथा न्यादर्श के रूप में मेरठ मण्डल के दो जनपदों मेरठ एवं बागपत से प्रत्येक से राजकीय एवं अनुदानित तथा मुक्त विद्यालय के प्रत्येक से 80–80 विद्यार्थियों को यादृश्च्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

'kks/k izfof/k %

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

“kks/k midj.k %

प्रस्तुत शोध में डॉ0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित किया गया है, प्रस्तुत परीक्षण 14 वर्ष से अधिक आयु के विद्यार्थियों के लिये है, जिसमें 38 कथन हैं। कथन विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बधित है तथा प्रत्येक कथन के दो उत्तर A एवं B दिये गये हैं जिनमें से विद्यार्थियों को एक उत्तर का चयन करना होता है।

izkIrkadks ds vk/kkj ij 'kSf{kd vfHkizj.kk dk oxhZdj.k

Ø0 l0	Lrj (Level)	izkIrkad (Scores)	
		ckyd	ckfydk
1.	उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा	33 एवं 33 से उच्च	34 एवं 34 उच्च
2.	सामान्य शैक्षिक अभिप्रेरणा	26 से 32 तक	27 से 33 तक
3.	निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा	25 एवं 25 से निम्न	26एवं 26 से निम्न

iz;qDr lkaf[;dh %

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण तथा टी–अनुपात नामक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

fo'ys"k.k ,oa O;k[;k %

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विधियों के आधार पर प्राप्त परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नलिखित सारणी द्वारा दर्शाया गया है।

rkfydk&1 राजकीय, अनुदानित एवं NIOS विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन दर्शाने वाली तालिका

jktdh;	vuqnkfur	NIOS
N = 160	N = 160	N = 160
M = 24.17	M = 26.20	M = 25.38
SD = 5.63	SD = 5.02	SD = 5.21

तालिका से स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 24.17 अनुदानित विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 26.02 से कम है तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 25.38 पाया गया है अर्थात् राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अंतर है जबकि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा शेष दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियो की अभिप्रेरणा के लगभग समान पाया गया।

rkfydk&-2 राजकीय, अनुदानित एवं NIOS विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का प्रसरण विश्लेषण द्वारा अध्ययन की तालिका

lzkr	df	SS	MS	F Ekku
समूह के मध्य	2	333.95	166.98	**5.96 ***
समूह के अन्दर	477	13371.54	28.03	
योग	479	13705.50		

नोट : * .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका से प्राप्त विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में परिगणित एफ–अनुपात का मान 5.96 है। जो कि मुक्तांश -2 व 477 के -01 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 4.66 के अधिक है अतः .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि '' विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है'' को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात् .01 सार्थकता स्तर पर यह कहा जा सकता है कि राजकीय विद्यालयों, अनुदानित विद्यालयों तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। प्रसरण विश्लेषण परीक्षण के उपरान्त यह ज्ञात करने के लिए कि किन–किन विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों में सार्थक भिन्नता है, प्रसरण विश्लेषण के बाद टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्त टी–अनुपात मान के आधार पर तीनों प्रतिदर्शो के मध्यमानों की विभिन्न युग्मों के लिए व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। राजकीय विद्यालय, अनुदानित विद्यालय तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान के विभिन्न युग्मों के लिए परिगणित टी–अनुपात का मान तालिका 3 में दिया गया है।

rkfydk&3 प्रसरण विश्लेषणोपरांत राजकीय, अनुदानित एवं NIOS विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों का टी–अनुपात दर्शाने वाली तालिका

Øekd	fo|ky;	N	M	SD	t eku
1	राजकीय	160	24.17	5.63	3.40 *
	अनुदानित	160	26.20	5.02	
2	राजकीय	160	24.17	5.63	1.98 **
	NIOS	160	25.38	5.21	
3	अनुदानित	160	26.20	5.02	1.15 NS
	NIOS	160	25.38	5.21	

नोट : ** .05 स्तर पर सार्थक, NS = .05 स्तर पर सार्थक नही है।

तालिका से स्पष्ट है कि केवल एक युग्म राजकीय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों के लिये परिगणित टी–अनुपात का मान 3.40 है जो कि मुक्तांश 318 के .01 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.59 से अधिक है अतः .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अर्थात् शून्य परिकल्पना कि ''राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को .01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकार की जाती है। और कहा जा सकता है कि .01 सार्थकता स्तर पर राजकीय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों में

सार्थक अंतर है। जबकि, राजकीय विद्यालय एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों का परिगणित टी–अनुपात का मान 1.98 है। जो कि .05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 1.97 से अधिक है अतः .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् शून्य परिकल्पना कि राजकीय विद्यालय एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को .05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकार की जाती है और कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर राजकीय विद्यालय एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। केवल एक युग्म अनुदानित एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों का परिगणित टी–अनुपात का मान 1.15 है।

जो कि .05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 1.97 से कम है अतः .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अर्थात् शून्य परिकल्पना कि अनुदानित विद्यालय एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकार किया जाता है और कहा जा सकता है कि . 05 सार्थकता स्तर पर दोनों के मध्यमानों में समानता है। परीक्षण द्वारा प्राप्त अंतर संयोगवश हो सकता है।

fu"d"kZ %

1. राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है। क्योंकि परिगणित टी–अनुपात का मान तालिका के मान से अधिक है जो कि मुक्तांश 318 के .01 सार्थकता स्तर पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है।

2. 1. राजकीय एवं मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है। क्योंकि परिगणित टी–अनुपात का मान तालिका के मान से अधिक है जो कि मुक्तांश 318 के .05 सार्थकता स्तर पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना राजकीय एवं मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है।

3. अनुदानित एवं मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि परिगणित टी–अनुपात का मान तालिका के मान से कम है जो कि मुक्तांश 318 के .05 सार्थकता स्तर पर कम है। अतः शून्य परिकल्पना अनुदानित एवं मुक्त विद्यालयी संस्थान विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 **Best, J.W. (1983)**. Research in Education, Fourth Edition, New Delhi: prentice-Hall of India

2 **Gokulnathan, P.P.,** "A Study of Achievement Related Motivation and Educational Achievement among Secondary School Pupils"; Ph.D. Thesis, Dibrugarh Univ., 1972.

3 **Koul, L. (1984).** Methodology of Educational Research New Delhi: Vani Educational Book.

4 **Kumar, Subhash,** "A Study of Relationship of Parents Participation with Students Academic Achievement and Adjustment"; Dissertation, Department of Education, C.C.S. Uni., Meerut, 2003.

5 **Sa, Bidyadhar (2006).** "Achievement Motivation among Secondary School Tribal and Non-Tribal Students", Journal of Indian Education, Vol. : XXXII, No. : 3, N.C.E.R.T., New Delhi.

6 **Shanmugasundaram, R. (1983).** "An Investigation in to Factors Related to Academic Acievement among Undergradu ate Students Under Semester System"; Ph.D. Thesis, Psychology, Madras Univ.

7 **Sharma, K. and Other (1989)**. "Achievement Motivation, Adjustment and Self-Concept as Related with Academic Performance at +2 State"; The Progress of Education, Vol. LXIV (2) : 30-32.

8 **Sharma, P.L. (1981).** "A Study of Factors Related to Under Academic Achievement of Girls of Secondary Students Located in Rural Areas of Haryana"; Ph.D. Thesis, Education, Mysore University.

9 **Sharma, R.A. (1998).** Research in Education, Meerut: Surya Publication.

10 **Siddiqui, B.B. (1979).** "Effects of Achievement Motivation and Personality on Academic Success"; Ph.D. Thesis, Psychology, Gujarat. University.

11 gluoky] ,0 ¼1980½- 'विद्यार्थियों की स्व अवधारणा, शैक्षिक अभिप्रेरणा, कक्षा वातावरण और शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन,' पी–एच0 डी0 इन एजुकेशन, एम0एस0 विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

12 lkg] ih0d0 ,oa eNky] ,e0d0 ¼2000½. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के दूरस्थ शिक्षण अधिगम उपगमों की उपयुक्ता का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 19 अंक 2।

13 vxoky] me:'kpUn ¼2000½] माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियां और उनका समाधान, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्टूबर, पृष्ठ 105

14 eNky] eg'k dekj ¼2001½- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की कक्षा 10 के स्तर पर सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में अनुदेशन व्यूह रचनाओं की उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रभाविकता. अप्रकाशित पी–एच०डी० शिक्षा शोध ग्रन्थ, शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर.

15 eNky] ,e0 d0 ,oa lkg] ih0 d0 ¼2003½] राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के अधिगमकों की उपलब्धि पर अध्ययन सम्बन्धी आदतों का प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0आर0टी0, नई दिल्ली, 22(1)

16 eNky] ,e0 d0 ,oa dekj] lHkk"k ¼2008½] उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 15, अंक 3

17 jeu fcgkjh yky ,oa tk'kh] lj:'k pUn ¼2008½] शैक्षिक मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकशन

18 eNky] ,e0d0 ,oa lR;ohj ¼2009½] मुक्त विद्यालयी अधिगमकों की उपलब्धि पर गणित के विभिन्न शिक्षण उपागमों की प्रभाविकता का अध्ययन, शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका, वॉल्यूम – 3, अंक – 3, पृष्ठ. 72–79